Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

मध्ययुगीन मुगलकालीन भारत की कला विशेषकर वास्तुकला का उत्कृष्ट स्थान - एक आलोचनात्मक अध्ययन

Dr. Anita Kumari*

सार – ***ईस्लाम का जन्म ईसा की सातवीं शताब्दी में अरब रेगिस्तान क्षेत्र में हुआ और उनका प्रसार ईरान मध्य एशिया और अफगानिस्तान से लेकर समूचे मुस्लिम उपमहाद्विप में हुआ। इन देशों में मिट्टी तथा पक्की हुयी ईटों से भवन का निर्माण होता था। चिकनी टाईलों से सजाया जाता था। कालान्तर में हिन्दू मुस्लिम वास्तुकलाओं के पारम्परिक आदान-प्रदान से भारत में एक नयी भारतीय-ईस्लामी वास्तुकला का विकास हुआ।***

----------X----------

भारत में मुस्लिम वास्तुकला का विकास तीन चरणों में हुआ। दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत, स्वतंत्र क्षेत्रीय विकास के अंतर्गत तथा इन दोनों की परिणति मुगल शैली के रूप में हुआ।

बाबर 1526 ई॰ मे लोदी सेनाओं को पानीपत के युद्ध में हराया और मुगलों का उत्तरी भारत पर अधिपत्य हुआ। उस समय वास्तुकला के क्षेत्र में उपर्युक्त वर्णित स्थिति थी। मुगलकाल में बाबर से औरंगजेब के शासन काल तक महान मुगलों के काल में भवन-निर्माण की विशेषता विविधता और सौंदर्य की तुलना गुप्त काल से की जा सकती है।

पहली बार यह दिखाई देती है कि मुगल-काल में भवन निर्माण अधिक बड़े पैमाने पर किया गया। मुगल भवन निर्माण की योजनाएँ बड़े पैमाने पर तैयार की जाती थी। जिनके लौकिक उपयोग के भवनों से लेकर धार्मिक प्रयोजनों के लिए निर्मित किए गए भवन शामिल थे। इनमें अधिक भवन आज भी विघमान है। धन और संसाधनों के अभूतपूर्व उपलब्धता के कारण अधिक विशाल भवनों का निर्माण किया गया और उनके निर्माण में श्रेष्ठतर सामग्री का उपयोग किया गया। जो सल्तनत के शासकों के प्रांतो में संभव नहीं था।

मुगलकाल के पूर्व की वास्तुकला की विशेषता का वर्णन किया जाय तो यह कहा जा सकता है कि वह पारम्परिक (Traditional), अमूर्त (Discrete) तथा अनुकरणात्मक (Patronized)| उसमें बार-बार एक हीं प्रकार की सामग्री और डिजाइनों की संभावनाओं पर ध्यान दिया गया है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मुगल वास्तुकला में प्रतिभा का चरमोत्कर्ष हुआ जिसके अन्तर्गत 13वीं शताब्दी में भारतीय इस्लामिक वास्तुकला का आरंभ हुआ था।

सभी मुगल बादशाह वास्तुकला के पोषक एवं संरक्षक थे। अकबर के पुत्र शाहजहाँ के शासन से आरंभ हुआ जो 1627 ई॰ में सिंहासन पर बैठा बादशाह की रूची के अनुसार कलात्मक सृजन का संरक्षण दिया जाता था। यह बात इस कला में हुए समस्त भवन निर्माण कार्य उसी प्रकार से प्रकट होती है जिसका प्रारंभ उसके दादा अकबर के काल में हुयी। उसके संरक्षण में मुगल शैली पर उसके स्वभाव और चरित्र का स्पष्ट प्रभाव है।

इस संगमरमर काल (1627-1658) ई॰ की विशेषता भव्यता और मनोमोहता है। शाहजहाँ का समय मुगल वास्तुकला का स्वर्णयुग काल कहा जाता है। उससे सफेद संगमरमर के भवनों का निर्माण कराया। उसके काल की पत्तीदार मेहराबें, जड़बा खम्बों तथा पत्तीकार का काल अद्‌वितीय है। आगरा के दुर्ग की कुछ इमारतें को गिरवाकर उसने संगमरमर की इमारतें निर्मित करायी। इनमें दीवन-ए-आम, मच्छी भवन, दीवान-ए-खास, शीशमहल, मुस्समन बुर्ज तथा मोती

www.ignited.in

मस्जिद आज वर्तमान में अपनी प्रसिद्धी लिए हुए वर्तमान एवं दस्तब्य है। शाहजहाँ की जहाँआरा ने आगरा में जुमा मस्जिद का निर्माण कराया। इसके गुबन्दों के बाहरी भाग सफेद संगमरमर तथा लाल पत्थर के जुड़ाऊ काम से सुसज्जित है। शाहजहाँ ने दिल्ली की जुम्मा मस्जिद निर्मित करायी। शाहजहाँ के काल की सर्वश्रेष्ठ इमारत आगरा में ताजमहल बनाया, जो वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है और मुगलकाल विशेषकर शाहजहाँ सफेद संगमरमर के लिए सदा भारतीय इतिहास में चीरस्मरणीय रहेगा।

स्मरणीय है कि यह मध्य भारत के लिए मयुर सिंहासन, ताजमहल एवं आमदरबार की साजो सामान को देखने के लिए देश-विदेश के यात्री का तांता लगा रहता था। उसी समय में यूरोपियन देशों में समुंद्र के झंझावत की कठिन कष्टों से भारत के दरबार में आ रहे थे। गोवा में पुर्तगीज का प्रवेश हो चुका था। औरंगजेब के शासन के पचास वर्ष के अन्तर्गत ही अंग्रेज फ्रांसीसी तथा अन्य यूरोपीयन का भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप बढ़ता गया और मुगल शासन का अन्त कर औपनिवेशिक शासन की स्थापना प्रारंभ हो गयी।

संदर्भ सूची

(1) ब्राउन पर्सी - इंडियन आर्किटेकचर (ईस्लामी पीरियड)

(2) सक्सेना बनारसी प्रसाद - मुगल सम्राट

(3) मोरलैंड - इंडिया एट शाहजहाँ दि डेय औफ अकबर

(4) ताराचन्द - इन्फुलेन्स ऑफ इस्लाम ऑन इन्डियन कल्चर

(5) जियाउद्दीन देशाइ - इन्डो इस्लामिक आर्किटेकचर

(6) हरिश्चन्द्र वर्मा - मध्यकालिन भारत

(7) फरगुस्न - इंडियन आर्किटेकचर

Corresponding Author

Dr. Anita Kumari*